

502/15 1

(Continued B)

$15 \times 19 = 285$

५. नं० ४ का रंख्या हर बार फेलाउ

₹ 48,00,00,000

(शब) ४००००० ~~५००००~~

520000

००००
४००

400

६३

40

828 360

५६४४०

॥ ५६०००००००

5 4000000

४६००० ८

XoO

22

$258 \times 2 = 516$

५५०४४ ३४

5. 88000000

ΣΧΕΔΙΟ

५०५

80788

५० २५००००

300

93

250393

3000 30

498000

২৬০

$$\begin{array}{r} 83 \\ 22 \overline{) 186} \\ \underline{44} \\ 102 \\ \underline{66} \\ 36 \end{array}$$

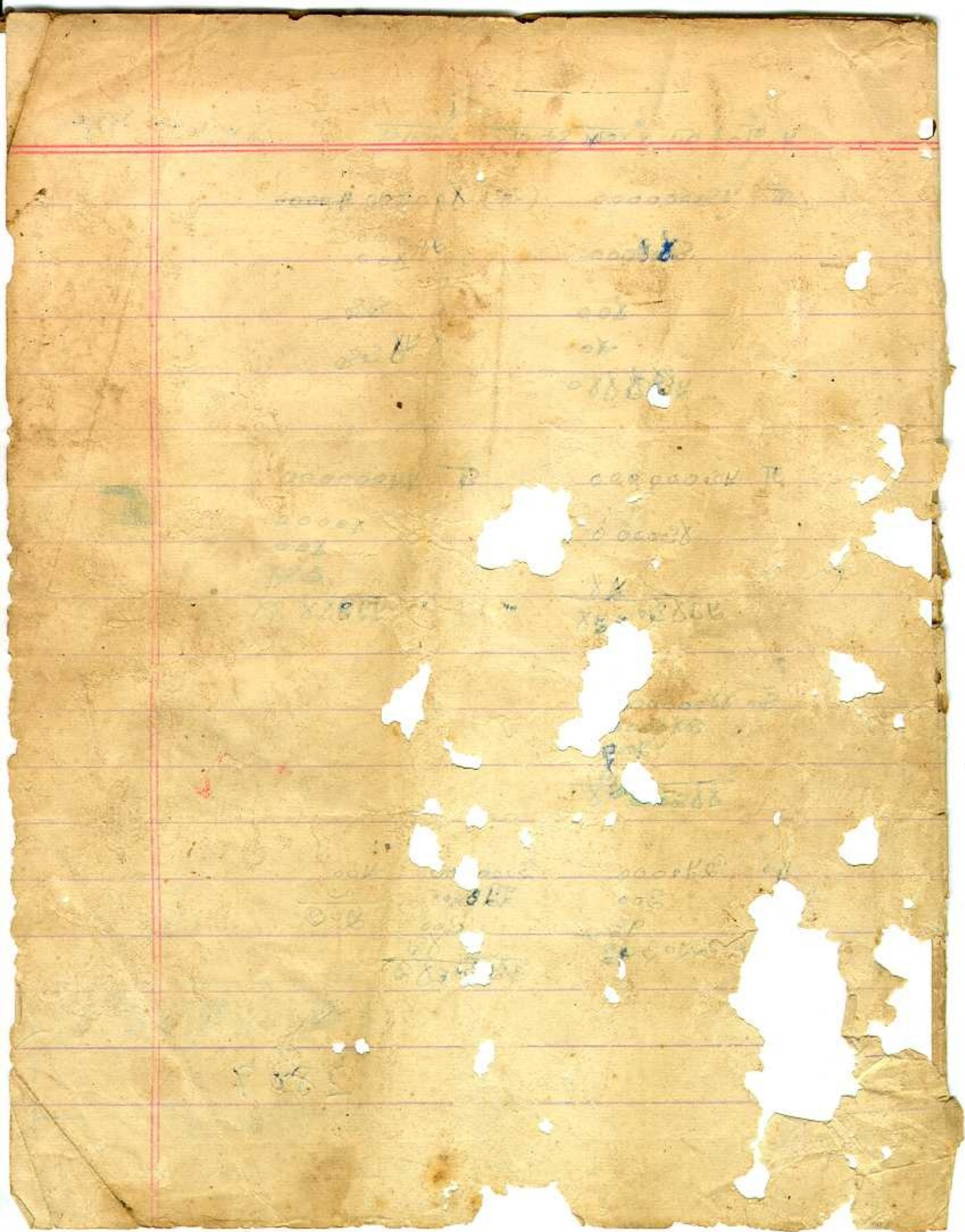
400

५०७

आ०५५ नरकवाच

2809

ASHA ARCHIVES



रग आरति ॥ ताल चो ॥ ॥

आरति सिरि निस्ते जोति समा

न ॥ १॥ फज चर सजयज

ये गाव ॥ हरि स्य भगत उधार

रति कर सिरि निस्ते जोति समा

न ॥ १॥ भुपात चर नसजये जये

गावत ॥ सब स्य रिमिकि उधार

आरति सिरि निस्ते जोति समा न ॥

॥ २ ॥ ॐ ॥

रग आरति ॥ ताल्वन्ता ॥ ॥
 हे संघर भगति जिन्नयाय आरति
 ॥ ध्रु ॥ ताल मृदंगथा तल सिर मु
 रतिरे ॥ वस पनि सिज्ये भोजना
 नयाय आरति ॥ हे सं ॥ १ ॥ निपज
 ये परकास मलन रंग वसेर ॥
 सुख लाये सिबया कृपानयाय आ
 रति ॥ हे ॥ २ ॥

पर

कृ

kukilos =

गुपत = गुप्त

नदी ॥ ॥

सुखे वाक्यमा

सर्वस्वस्य सुखमाप्नुयान्

सुखमाप्नुयान्

सुखमाप्नुयान्

सुखमाप्नुयान्

सुखमाप्नुयान्

सुखमाप्नुयान्

॥३॥

जो पाल, मोहन एमन छात्र हूँ हुँ
या छात्र हूँ हाजी आपना

रग आरति ॥ ताल चो ॥ ॥ हेजिन
याये. आरति ॥ धु ॥ नामकाव ईख
रीया. मनसतया. वस. चितन चेतन
वसमान. ॥ मायामोह अनतरस्य.
चितन. चेतन पुरस्य कोति सुराज
या तेज ॥ हेजि ॥ १॥ दयारिछिमि
या. पनि नेपालया अधि पति. जये
परका. सया भाव ॥ भगति. भावन

जो पास मोहन रमान छात्रहर हुन
को छात्रहर हिजा

व्रम. चरन कमल रसकोति सुरजया
तेज ॥ हे ॥ २ ॥ ॐ ॥

॥४॥

रग आरति ॥ ताल लंता ॥ ॥

रामे भगति भाव करत जोति

रूप साधना हा हा दिवे आर

ति ॥४॥ रसत बदन कोति रु

चिर चरन लोक विभासहे ॥

डेव डईत्ये धनुज आदी दि

व्ये दारुना हा २ दिव्ये आर

ति ॥ रामे ॥५॥ अमल कमल

पर विराज्ये अंत बासि सिरि

॥ ५ ॥

बिराजहे ॥ जयेपरकासः सूर्जबंसि
जोगभावनाः हाश् दीव्ये आरति ॥
रामे भगती भावकरत जोतिरूप
साधनाः हाश् ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥६॥

राग आरति ॥ ताल चो ॥ ॥ हेजि
नयाये आरति देवि. हे हो याये आ
रति ॥ धु ॥ दीपकरोधर. कुमुदी
निनंदीनी ॥ मनदर सरनर. र
नहर. माने आरति देवि ॥ हे हो
॥ १ ॥ भुपजगत जये. हे जदुनन्द
न ॥ निसिदीन चरनस. भजल
पेयाये आरति देवि ॥ हे हो ॥ २ ॥

॥ ७ ॥ ५ ॥ ॥

राग आरति ॥ ताल प्रताल ॥ १५ ॥

जये २ कृष्ण हरे मुरारे ३ ॥ ध्रु ॥ हा

हादे मछे कुं भवाराहा नरसिंह

वेद उपपरहा रसदे स वेद उपप

रहारे ॥ बाउन प्रस राम रामने

मारे ॥ बलिछल लित कुल राव

न मारे ॥ जये २ ॥ १ ॥ बलभद्र

बुद्ध क्रीपा कर मोही कलंकि

रूप पद हा रसदे स कलंकि रूप

॥ ८॥

पदहारे ॥ चारपरा रथ हरि

गुनगावे ॥ गावत कृष्णनाम

दसअवतार ॥ जये २ कृष्ण हरे

मुरारे ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग आरति ॥ ताल चो ॥ ॥

हेमनरा मभजोरे केसब सिल
 ससिरोरे हेमनरा मभजोरे ॥ गंगा
 चरनस अंगमिलोरे त्रिपुरा सुर
 जिनल्हाये ॥ कदंब सिधर माम
 लेचितले ॥ हरि संघर गचलाये
 ॥ हेमन ॥ १ ॥ गौरि चरनस पैले
 मजाई पितां भवजिनल्हाय ॥
 परताप सिंह प्रभु करजोरि आरति

॥ सिरिपरदेवकि भाव ॥ हे ॥ २ ॥

॥ ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

रगआराति ॥ तालचो ॥ ॥ नागंय

नत्ये. नमोनमो हरिहरि ॥ ध्रु ॥ ॥

कमल नयेन. कमला पति केश

ब ॥ परमपुरान. त्यनमो २ ॥ हरि ॥

॥ १ ॥ हेमंगिरि. धारिनि. गोकुल

तारनि ॥ पुरान. पुरुषते. नमो ॥ २ ॥

॥११॥

वसुदेव नंदनः कंसानि खंडीनी ॥

मुरारिः मनोहरते नमो ॥ ३ ॥ गरुध

बाहानः हरिगोपिजनबलः ॥ मोह

नः मुरारिते नमो ॥ ४ ॥ कहये अ

जुगहये वैकुंठ नायक ॥ श्रीदा

मोदरत्ये नमो ॥ हरि २ ना ॥ ५ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥१२॥

राग आराते ॥ ताल चो ॥ ॥३॥

हे मोहन गोपिनाथ सोवजि अ

नाथ ॥ ध्रु ॥ अगतिन गति लाये

लये मति आरतिरे ॥ रुकुमि

निरे रमेश देव भावना हान

याये आराते ॥ हे मो ॥ १ ॥ काम

क्रोध लोभ अति दुर सिर

मुरुतिरे ॥ मयनाछा त्रिभुव

नया नाथ सोवजि अनाथ ॥ २ ॥

॥१३॥

माया मोह पाप अति बिबेकी व

जाल नरे ॥ थका वाजि जडु कुल

या नाथ सो वाजि अनाथ ॥ हे मो ॥

॥३॥ चररा सररा तिव करुना

कृपा तिवरे ॥ ल्हाक म्हायाना

जडु नाथ सो व जि अनाथ ॥ हे मो

हन ॥४॥ ॥॥॥ ॥॥॥ ॥॥॥

सग आरति ॥ तालप्रताल ॥ ॥
 हे सुधामा मंडीरदे विभुल्यो
 ॥धु॥ तिरियापथावल चेतनिल
 लुया ॥ तंदुर बाडगयोरे ॥सु॥
 ॥१॥ तंदुर देषिये वऊत मन
 दरषी ॥ जोभावे सो मागियेरे
 ॥सु॥ २॥ ॐ यहिथान होत
 हामा रियोपरिया ॥ अंतरको
 त बनाये ॥सु॥ ३॥ आयेसुधा

॥१५॥

मा. ऊ. सुषन वैथल. ॥ चौडी ग
चवर दोलाये ॥ सु ॥ ४ ॥ सुरदा.
सके. प्रभु तुमारि दरसको ॥ गरि
ब. उधार. कि योरे ॥ सु ॥ ५ ॥ ॥१॥

॥ ॥ ॥१०॥

॥१६॥

राग आराति ॥ ताल लंता ॥ ॥

गरुध गमनाये भगति नमो ॥

॥धु॥ असरन सरनस रनस

सि. रुहररे ॥ सुर मति कृतरम

नायो भ ॥१॥ गोकल बालष गो

प पनि पालकरे ॥ गोपिनिजन

गमनाये ॥ भ ॥२॥ कलिवल लो

चनक मलंकि लोचनेरे ॥ कमला

पति दमनाये ॥ भ ॥ ३ ॥ गो

वर्धनधरलपु. कंसकि सिंहलरे ॥
 कालि. फनि. दसनाये ॥ भ ॥ ४ ॥
 गात्रय. उमापाति. ह्रिदये नाराय
 नरे ॥ नर. का. सुर. सख नाये ॥ भग
 तिनमो ॥ ५ ॥ ॥ ११ ॥

हार्मो दुत का काम मरि रहे

विनी हार्मो विष्णुया

राग आरति ॥ ताल चौ ॥ ॥

आरति याये जिन मनस तयाव ॥

॥ ध्रु ॥ कृष्ण जुया चरनस मन तेये

माल ॥ वसया भजना याये ला

युव मुगुति ॥ आ ॥ १ ॥ अनाथया

दान थास क्षे मा याये माल ॥ लूहा

कम्हया मनरथ पुरे याये माल ॥

आ ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ १२ ॥ ॥ ॥

प. न. नं० ४ का रस-यादुर बाट के लाउ

सरस्वती श्री गणेशाय नमो

५६६८०
२६००००००
६४००००
४०००
२६६८८८०

१०४८

171

9932

2000

卷之八

आम्रक

2809

ASHA ARCHIVES